केशव-ग्रंथावली

खंड १

(रसिकप्रिया और कविप्रिया)

संपादक

श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र

हिंदी-विभाग, काशी विश्वविद्यालय

१९५४

हिंदुस्तानी एकेडेमी

उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

(कवित्त)

बारे न बड़े न बृद्ध नाहिनै गृहस्थ सिद्ध,
बावरे न बुद्धिवंत, नारियौ न नर से।
अंगी न अनंगी तन ऊजरे न मैले मन,
स्यार ऊ न सूरे रन थावर न चर से।
दूबरे न मोटे रंक राजा ऊ कहे न जाइँ,
मर न अमर अरु आपने न पर से।
बेद हू न कछु भेद पाइजतु 'केसोदास',
हरिजू से हेरे हर हरि हेरे हर से ॥४७॥

(दोहा)

कोकिल से अति कृस्न घन करिनी सो गिरिराज।
मृग सूरो मृगराज सो, ऐसो बरनत लाज ॥४८॥

अथ संकीर्णोपमा–(दोहा)

बंधु, चोर, बादी, सुहृद, कल्प, बृच्छ, प्रभु जानि।
सम, रिपु, सोदर आदिदै, इतने अर्थ बखानि ॥४९॥

(कवित्त)

बिधु को सो बंधु किधौं चोर हासरस को कि,
कुंदन को बादी किधौं मोतिन को मीत है।
कल्प कलहंस को कि छीरनिधि छबि बृच्छ,
हिम-गिरि-प्रभा-प्रभु, प्रगट पुनीत है।
अमल अमित अंग गंगा के तरंग सम,
सुधा को सुबुद्धि रिपु रूपक अभीत है।
दिस दिस देस देस परम प्रकासमान,
किधौं 'केसोदास' रामचंद्रजू को गीत है ॥५१॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां
विशिष्टालंकारवर्णने उपमालंकारवर्णनं
नाम चतुर्दशः प्रभावः ॥१४॥

---

[४९] बृच्छ–प्रच्छ (दीन०); बृष्यु (बाल०)। तरंग०–तरंगन को (दीन०)। सुधा०–सोदर सुधा को (दीन०); सुधा को समूह (सरदार०)। रूपक–रूपको (दीन०, सरदार०)।

१५

अथ नखशिख-वर्णन–(दोहा)

सबिता के परताप ज्यौं बरन्यो कबिता-अंग।
कहौं जथामति बरनि त्यौं बनिता के प्रत्यंग ॥१॥
कही जु पूरब पंडितनि जाकी जितनी जानि।
तितनी अब ता अंग की उपमा कहौं बखानि ॥२॥
नख तें सिख लौं बरनियै देवी दीपति देखि।
सिख तें नख लौं मानुषी 'केसवदास' बिसेषि ॥३॥
जग के देवी देव के श्रीहरिदेव बखानि।
तिन हरि की श्रीराधिका इष्टदेवता जानि ॥४॥
भूषित तिनके भूषननि त्रिभुवनपति के अंग।
तिनके 'केसवदास' कबि बरनतु है प्रति अंग ॥५॥
उपमा और समान सब इतनो भेदु बखानि।
जावकजुत पद बरनियै महँदीसंजुत पानि ॥६॥

अथ जावक-वर्णन–(दोहा)

राजु रजोगुन को प्रगट प्राची दिसि को भागु।
रंगभूमि जावकु बरनि कोपराग अनुरागु ॥७॥

अथ जावक-वर्णन–(कवित्त)

कोमल अमलता की किधौं यह रंगभूमि
सोभिजतु अंगनु कि सोभा के सदन को।
अरुन दलनि पर कीनो कि तरनि कोप,
जीत्यो किधौं रजोगुनु राजिव के गन को।
पलु पलु प्रनय करत किधौं 'केसोदास'
लागि रह्यो पूरबानुरागु पिय-मन को।
एरी बृषभानु की कुमारि तेरे पाइँ सोहै
जावक को रंगु कै सुहागु सौतिजन को ॥८॥

अथ चरणोपमा–(दोहा)

अति कोमल पद बरनियै पल्लव कमल समान।
जलज कमल से चरन कहि कर कहि थलज प्रमान ॥९॥

---

[७] राजु–रागु (वाशिक०)। विशेष–नखशिख वाशिक अ० और दीन० में नहीं है।

आचार्य केशवदासकृत

वीरसिंहदेव चरित

(व्याख्या सहित)

व्याख्याकार

डॉ० किशोरीलाल

शक १९१९ : सन् १९९७ ई०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद

समान थीं तथा वहाँ के लोग रजोगुण रहित थे (वे सब सात्त्विक गुण के थे)। दसों दिशाओं में (प्रत्येक ओर) विशाल दीप जल रहे थे और प्रतिदिन नवीन बंदनमालाओं से लोग अपने गृह को अलंकृत करते थे। प्रत्येक घर में लोग नाना प्रकार के मंगल गीत गाते थे तथा अपार नगाड़े और मृदंग बज रहे थे।

गावत गीत सरस सुंदरी। चतुर चारु सो सुफरक फरी।
सुंदर दोऊ देवकुमार। गए चतुर्भुज के दरबार॥२२॥
देखे जाय चतुर्भुजदेव। जिनकी करत जगत सब सेव।
चंदन चर्चित एक प्रबीन। सोभत तहाँ बजावत बीन॥२३॥

शब्दार्थ—सुफरक=सुफलक, सुफल। फरी=फली हुई। सुफरक फरी=समस्त कामनाओं से पूर्ण। चतुर्भुज=विष्णु (यहाँ विष्णु रूप वीरसिंहदेव से तात्पर्य है)। सेव=पूजा। चर्चित=लगा हुआ।

व्याख्या—वहाँ सुन्दरियाँ सरस गीत गा रही थीं। वे चतुर, सुंदर और अपनी समस्त कामनाओं से पूर्ण थीं। उन्हें सब प्रकार के फल की प्राप्ति हो चुकी थी। दोनों सुन्दर देवकुमार (लोभ और दान) विष्णु के दरबार में गये। वहाँ विष्णु को जाकर देखा कि उनकी अर्चना सारा संसार करता है। वहाँ कोई चतुर व्यक्ति चंदन लगाये हुए वीणा बजा रहा था।

जिनकी धुनि सुनि मोहै सभा। मानौ नारद पावन प्रभा।
पढ़त पुरान एक बहुभेव। मानो सोभित श्री सुकदेव॥२४॥
बेद पढ़त बहु बिप्र कुमार। मानौ सोभत सनत कुमार।
सेवत संन्यासी तजि आधि। मनौ धरैं बहु सिद्ध समाधि॥२५॥

शब्दार्थ—पावन प्रभा=निर्मल कांतियुक्त। बहुभेव=अनेक प्रकार से। आधि=मानसिक चिन्ता।

व्याख्या—उनकी वीणा की ध्वनि को सुनकर सारी सभा मोहित हो जाती है और ऐसा लगता है मानो साक्षात् निर्मल कांति से युक्त नारद की ही वीणा बज रही हो। कोई अनेक ढंग से पुराण बाँच रहा है और ऐसा लगता है मानो श्री शुकदेव ही शोभित हों। बहुत-से ब्राह्मणों के बालक वेद पढ़ रहे हैं,, लगता है मानो वे सब सनत् कुमार (ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में एक) हों। संन्यासी अपनी मानसिक चिन्ता से रहित होकर उनकी अर्चना करते हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो बहुत-से सिद्धगण समाधि लगाये हुए हैं।

टिप्पणी—इसमें उत्प्रेक्षा अलंकार है।

पंडित करत बिचार अनंत। षट दरसन जे मूरतिवंत।
गाय बजावत नाचत एक। जनु किंनर गंधर्ब अनेक॥२६॥
तहाँ दिगंबर नर देखियै। महादेव जू से लेखियै।
तिहिं अंगन अंगना अपार। भूषन पट पूरन सिंगार॥२७॥

शब्दार्थ—षट दरसन=मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य, वेदान्त। एक=कोई। किंनर-गंधर्व=देवताओं की गानेवाली एक जाति। दिगंबर=नग्न रहनेवाले साधु। अंगना=स्त्री।

अवतरण—इसमें चतुर्भुज के दरबार की तुलना स्वर्ग में विष्णु के दरबार से की गयी है।

व्याख्या—इस दरबार में पंडितगण अनंत विचार (चिन्तन) करने में लीन हैं जो मूर्तिमान् षट् दर्शन हैं। कोई इस दरबार में गाता-बजाता है। ऐसा लगता है कि मानो ये स्वर्ग के किन्नर एवं गन्धर्व हों। वहाँ कुछ नग्न रहनेवाले साधु भी दिखायी देते हैं, उन्हें देखकर लगता है मानो ये विष्णु दरबार के शिव हों (शिव प्रायः नग्न रहा करते थे)। उस आँगन में भूषण तथा अच्छे वस्त्र पहने हुए और पूर्ण शृंगार (सोलह शृंगार) किये हुए बहुत-सी स्त्रियाँ थीं।

क्षमा दया सी मूरतिवंत। श्री ह्री धी सी समुझत संत।
सोभति अति सुंदर सुभ सदा। संख चक्र कर पंकज गदा॥२८॥
पद ऊपरै स्याम तल लाल। बरनत 'केसव' बुद्धि बिसाल।
मनौ गिरा जमुना जल आय। सेवत चतुर चरन चित लाय॥२९॥

शब्दार्थ—श्री=लक्ष्मी। ह्री=लज्जा, व्रीडा। धी=बुद्धि। तल=तलुवे। गिरा=सरस्वती, जिसका वर्ण रक्त माना गया है। चतुर=बुद्धिमान् (वीरसिंहदेव का विशेषण)। सेवत=पूजा करते हैं।

व्याख्या—ये स्त्रियाँ मूर्तिमान् क्षमा और दया थीं तथा संतजन उन्हें स्वर्ग की लक्ष्मी, बुद्धि और व्रीडा तुल्य समझते थे। चतुर्भुज के कमलवत् हाथ में शंख, चक्र और गदा शोभित है। उनके चरण के ऊपरी भाग श्याम और तलुवे रक्त हैं। केशवदास अपनी विशाल बुद्धि से उसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि मानो सरस्वती (लाल तलुवे से अभिप्राय है) और यमुना (चरण के ऊपरी भाग जो यमुना की भाँति श्याम हैं) मन लगाकर (सानुराग) बुद्धिमान् (चतुर्भुज) की चरणोपासना कर रही हों)।

हीरा मनिमय नूपुर आय। स्वेत पाट पट जटे सुभाय।
नख दुति चमकति चरन मुकुंद। गंगाजल कैसे जल बुंद॥३०॥
गजमोतिन की माला लसै। साधुन कैसे मन उर बसै।
कंठमाल मुकुतनि की चारु। स्रुति बरनन कैसो परिवारु॥३१॥

शब्दार्थ—आय=लगे हुए (पहने हुए) हैं। पाट पट=रेशमी वस्त्र। जटे=रत्नजड़ित। सुभाय=अच्छा लगनेवाला। मुकुंद=विष्णु (वीरसिंहदेव से अभिप्राय है)। गजमोतिन=गजमुक्ता। स्रुति बरनन=श्रुतियाँ जिस तरह विष्णु का वर्णन करती हैं। कैसो=समान।

व्याख्या—चतुर्भुज अपने चरणों में हीरा और मणियों से जड़ित नूपुर पहने हैं। वे सुभग रत्न लगे श्वेत रेशमी वस्त्र धारण किये हैं। चतुर्भुज के चरणों के नाखून की प्रभा चमक रही है। वह गंगा के जलबूँद के समान प्रतीत होती है (चूँकि विष्णु के चरण में गंगा का निवास है, अतः चरण-नख की द्युति की तुलना विष्णुपदी-गंगा के जल से की गयी है)। उनके गले में गजमुक्ता की माला शोभित है, वह मन में उसी प्रकार बस जाती है जैसे सन्तों के मन में विष्णु बस जाते हैं। मोतियों की सुंदर कंठमाला भी उनके गले में शोभित हो रही है। श्रुतियाँ जिस तरह विष्णु का निरन्तर वर्णन किया करती हैं, ठीक उसी प्रकार उनका परिवार भी है।

टिप्पणी—इसमें उपमा अलंकार की प्रधानता है।

भृगुलताहु सोभा को सद्म। श्री कमलाकर कैसो पद्म।
कटितट छुद्रघंटिका बनी। बिच बिच मोतिन की दुति घनी॥३२॥
चंदन तिलक स्वेत सिर पाग। मुक्ता श्रुति सोभित सु सभाग।
देखत होय सुद्ध मन छुद्र। निकसे मथि जनु छीर समुद्र।
सीस छत्र मरकतमय दंड। मानौ कमल सनाल अखंड॥३३॥

शब्दार्थ—भृगुलताहु=भृगु मुनि के चरण का चिह्न जो विष्णु की छाती में है। सद्म=घर। श्री=लक्ष्मी। कमलाकर=तड़ाग, तालाब। कैसो=सदृश। पद्म=कमल। कटितट=कमर में। छुद्रघंटिका=करधनी। बनी=सोभित है। घनी=अत्यधिक। पाग=पगड़ी। अखंड=पूरा, सम्पूर्ण। सभाग=सौभाग्यशाली (वीरसिंहदेव का विशेषण)। मरकत=पन्ना नामक रत्न।

व्याख्या—विष्णु की छाती में भृगु ऋषि के चरण का चिह्न भी शोभा का घर है (अतिशय सुंदर है)। वह लक्ष्मी के सरोवर के कमल के समान सुंदर है।

उनकी कमर में करधनी शोभित है जिसमें बीच-बीच में मोतियों का अत्यधिक प्रकाश है। वे चंदन का तिलक लगाये हैं और सिर पर श्वेत पगड़ी बाँधे हैं। उनके कान में मुक्ता शोभित है। ऐसे रूप को देखकर छुद्र मन (दूषित मन) शुद्ध हो जाता है। वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो क्षीरसागर मथकर निकाले गये हैं। उनके सिर पर छत्र और हाथ में मरकत मणि (पन्ना जड़ित) दण्ड है। ऐसा लगता है मानो सम्पूर्ण नाल (कमलदंड) सहित कमल हो।

टिप्पणी—इसमें उपमा से पुष्ट उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(दोहा)

बरनै कहा चतुर्भुजहि 'केसव' बुद्धि तुसार।
जिनकी सोभा सोभिजै सोभा सब संसार॥३४॥

शब्दार्थ—बुद्धि तुसार=बुद्धि पर तुषार-पाला पड़ गया है।

व्याख्या—केशवदास कहते हैं कि मेरी बुद्धि पर पाला पड़ गया है, अतः मैं चतुर्भुज का वर्णन क्या करूँ? (कैसे करूँ?), क्योंकि उनकी शोभा से ही विश्व की शोभा को शोभा प्राप्त होती है (विश्व की सुन्दरता उन्हीं की सुन्दरता से शोभित होती है)।

टिप्पणी—इसमें अतिशयोक्ति अलंकार की प्रधानता है।

(चौपही)

करि प्रनाम तब राजकुमार। देखत नगर गए बाजार॥३५॥

व्याख्या—इसके बाद उन्हें प्रणाम करके दोनों राजकुमार (दान और लोभ) नगर देखते हुए बाजार गये।

इति श्रीमत्सकलभूमंडलाखंडलेश्वरमहाराजाधिराजराजा श्री वीरसिंहदेव चरित्रे श्री चतुर्भुज दर्शनं नाम षोडशमः प्रकाशः॥१६॥

१७

अति लामी अति चौरो चारु। बिसद बैठकी ऊँच बिचारु।
दुपद चतुष्पद जन बहुभाँति। भाजन भोजन भूख न जाति॥१॥
डासन बासन आसन जानि। मूल फूल फल नवरस पानि।
आयुध सुखद सुगंध बिधान। चित्र बिचित्र बिबिध तन त्रान॥२॥